राष्ट्रवाद और सरदार वल्लभ भाई पटेल

डॉ० शुभा बाजपेयी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
एस०एन० सेन बा०वि० पी०जी० कॉलेज, कानपुर
ईमेलः

सारांश

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में विकसित राजनीतिक अवधारणाओं में राष्ट्रवाद का एक विशिष्ट महत्व है। राष्ट्रवाद लोगों के किसी समूह की उस आस्था का नाम है, जिसके तहत वे खुद को साझा इतिहास, परम्परा, भाषा, जातीयता और संस्कृति के आधार पर एकजुट मानते है। यह एक ऐसी भावना है जिसमें राष्ट्र सर्वोपरि होता है अर्थात् राष्ट्र को सबसे अधिक प्राथमिकता दी जाती है। यह विचारधारा किसी भी देश के नागरिकों की साझा पहचान को बढ़ावा देती है। किसी भी राष्ट्र की उन्नति एवं सम्पन्नता के लिए नागरिकों में सांस्कृतिक, धार्मिक तथा भाषाई विविधता से ऊपर उठकर राष्ट्र के प्रति गौरव की भावना को मजबूती प्रदान करना आवश्यक है औश्र इसमें राष्यट्रवाद एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।[1]

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ० शुभा बाजपेयी

राष्ट्रवाद और सरदार वल्लभ भाई पटेल

RJPP Dec.22,
Vol. XX, Special Issue

pp.68-73
Article No. 11

Online available at *:*
https://anubooks.com/journal/rjpp

DOI:
http://doi.org/10.31995/rjpp.2022v20iS.11

आज देश का प्रत्येक नागरिक अपने राष्ट्र के प्रति कृतज्ञता प्रदर्शित करना चाहता है। क्योंकि हमारा देश अर्थात् हमारी जन्मभूमि हमारी माँ ही तो होती है। जिस प्रकार माता बच्चों को जन्म देती है तथा अनेक कष्टों को सहते हुए भी अपने बच्चों की खुशी के लिए अपने सुखों का परित्याग करने में भी पीछे नहीं हटती है, उसी प्रकार अपने सीने पर हल चलवाकर हमारे राष्ट्र की भूमि हमारे लिए अनाज उत्पन्न करती है, उस अनाज से हमारा पोषण होता है। जो व्यक्ति जहाँ जन्म लेता है, वहाँ की आबोहवा, वहाँ की वनस्पति, नदियाँ एवं अन्य सभी प्रकृति प्रदत्त संसाधन मिलकर हमारे जीवन को विकास के पथ पर अग्रसर करते है और हमें शारीरिक एवं मानसिक स्तर पर बलिष्ठ बनाते है। मातृभूमि के स्नेह एवं दुलार में इतनी ताकत होती है कि वह हमें अन्य राष्ट्रों के सामने मजबूती से खड़ा होने की शक्ति प्रदान करती है। वास्तव में राष्ट्र का जन्म तभी होता है, जब इसकी सीमा में रहने वाले सभी नागरिक सांस्कृतिक विरासत एवं एक दूसरे के साथ भागीदारी में एकता की भावना महसूस कर सके। राष्ट्रवाद की भावना ही कश्मीर से कन्याकुमारी तक भारत को एक धागे में बांधती है।[2]

यह राष्ट्रीय एकीकरण का कार्य लौट है पुरूष सरदार वल्लभभाई पटेल ने किया। वे मानवतावादी पुरूष, आधुनिक भारत के निर्माता तथा राष्ट्रीय एकता के अद्वितीय शिल्पी थे। उनसे हमें अनेक बातें सीखने को मिलती है। हमारी राष्ट्रीय जागृति के इतिहास में उनका स्थान प्रथम श्रेणी के वीर पुरूष का है। इस जीवन चरित्र में उनका उत्कृष्ट देश प्रेम, अप्रतिम और निःस्वार्थ सेवा भावना, विलक्षण बुद्धिशक्ति तथा निर्भयता के गुण पग–पग पर हमारे सामने आते है। गाँधी जी के वफादार साथी और अनुयायी के रूप में सरदार जी ने सत्याग्रह के अनेक संग्रामों में नेतृत्व ग्रहण करके सामान्य जन का निर्माण किया। उसके बाद स्वराज्य आने पर पंडित जवाहरलाल नेहरू के वफादार साथी के नाते सरदार साहब ने भारत के शासनतंत्र को देश के प्रति जिम्मेदार और सुदृढ़ बनाया।[3]

सरदार जी के लिए देश पहले था, यह उनके व्यक्तित्व की महानता थी कि उन्होंने कभी भी पद के लिए नहीं बल्कि देश के लिए काम किया। उनके मन में जो राष्ट्रवाद की भावना निहित थी उसी का परिणाम था कि अनेक वर्षों तक किए गये कठिन संघर्षों एवं असंख्य बलिदानों के कारण ही अंग्रेजों से भारत को स्वतंत्रता मिल पायी। उस समय भारत कई रियासतों में विभाजित होने के बावजूद स्वतंत्रता के लिए संघर्ष में एक राष्ट्र के रूप में खड़ा था। आजादी के बाद देशी रियासतों का भारत में विलय कराने में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। राज्य व्यवस्था की संरचना में सरदार जी गाँधीवादी मूल्यों के व्यावहारिक आचरण पर बल देते थे।

प्रान्तीयता एवं क्षेत्रीयता के संकुचित दायरों के स्थान पर वे व्यापकता के पक्षधर थे, इसलिए उन्होंने देशी रियासतों का भारत में विलय करवाया। लोकमान्य तिलक की भॉति भारतीय राष्ट्र सप्राण को परम दृढ़ बनाना ही सरदार पटेल के जीवन का महामंत्र था।[4]

राजनीतिक सूझबूझ, व्यवहार, कुशलता और राजनयिक योग्यता से पाँच सौ से अधिक छोटे–बड़े देशी नरेशों का भारत संघ में विलय कर राष्ट्र की क्षेत्रीय विस्तार सीमा और अखण्डता की उन्होंने रक्षा की। उनकी तुलना जर्मनी के बिस्मार्क से की जाती है जो कार्य बिस्मार्क ने ''रक्त और अयस'' से किया। वही कार्य पटेल जी ने राजनय से किया। सरकार पटेल को राष्ट्रीय अस्मिता और गौरव का पूर्ण ध्यान था। सोमनाथ मन्दिर के पुनः निर्माण को राष्ट्रीय कार्य समझा।

पटेल जी हमेशा देश के लिए कार्य करने की सलाह देते थे। उन्होंने कहा कि ''आज की देश की परिस्थितियों में और दुनिया की डांवाडोल स्थिति में जीवन के अंतिम श्वास तक जितनी सेवा हो सके, उतनी करना हमारा धर्म है। फल तो प्रभु के हाथ में है।''[5]

राष्ट्रभाषा के रूप में सरदार जी ने हमेशा हिन्दी का समर्थन किया। संविधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाने के लिए सराहनीय प्रयास किये। उनके अनुसार ''राष्ट्रभाषा न तो किसी प्रान्त और न किसी जाति की है वह सारे भारत की भाषा है और उसके लिए यह आवश्यक है कि सारे भारत के लोग उसे समझ सकें तथा अपनाने का गौरव हासिल कर सकें।''[6]

उन्होंने समाज में भेदभाव का विरोध किया तथा अस्पृश्यता को हिन्दू–समाज का कलंक बताया। उन्होंने कहा कि ''वह धर्म के बहाने चलने वाला एक ढोंग है, हमें उसे मिटाना ही पड़ेगा।''[7]

स्वराज्य का दर्शन सरदार पटेल ने महात्मा गाँधी से प्राप्त किया। स्वतंत्रता की अवधारणा में उनका विश्वास था। सुराज्य की अवधारणा में सरदार पटेल विशेष आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक व्यवस्था पर बल देते थे। वे स्वराज्य का समर्थन करते थे। 30 मई से 1 जून 1921 को पॉचवी गुजरात राजनीतिक परिषद हुई। सरदार जी इसके अध्यक्ष चुने गये। उनका अध्यक्षीय भाषण उस उत्साह को प्रतिबिम्बित करने वाला था। हमें कैसा स्वराज्य चाहिए इसकी कल्पना करते हुए उन्होंने कहा कि हमें ऐसा स्वराज्य चाहिए, जिसमें रूखी–सूखी रोटी न मिलने के कारण सैकड़ों मनुष्य मरते न हो, जिसमें लोगों को कपड़ें के लिए पराये मुल्कों पर आधार न रखना पड़ता हो, थोड़े से विदेशियों की सुविधा की खातिर राजकाज विदेशी भाषा में न चलता हो, हमारे विचारों और शिक्षा का माध्यम विदेशी भाषा का न हो, राज्य का शासन जमीन और आसमान के बीच पृथ्वीतल से सात हजार फीट की ऊँचाई वाले स्थान (शिमला) से न होता हो तथा महान देशभक्तों की स्वतंत्रता तो खतरे में न हो, परन्तु शराबियों की आजादी की रक्षा करने की खास तौर पर चिन्ता रखी जाती हो, ऐसी स्थिति स्वराज्य में नहीं हो सकती। स्वराज्य में देश की रक्षा के लिए इतना सैनिक व्यय नहीं हो सकता कि देश को गिरवी रखकर दिवाला निकालने की नौबत आ पहुँचे। स्वराज्य में हमारी फौज भाड़े के टट्टू नहीं हो सकती। उसका उपयोग हमें गुलाम बनाने और दुसरी जातियों की स्वतंत्रता नष्ट करने में नहीं होगा। बड़े अफसरों और छोटे नौकरों के वेतन में आकाश–पाताल का अन्तर नहीं होगा, इन्साफ अत्यन्त महंगा और असंभव सा नहीं होगा और सबसे अधिक तो यह है कि जब हमारा स्वराज्य होगा, तब हमारे जीवन, अपने देश में तथा साथ ही विदेशों में जहाँ तहाँ हमारा तिरस्कार नहीं किया जायेगा।[8]

सरदार पटेल स्वदेशी के समर्थक थे, उन्होंने पाश्यात्य पद्धति का विरोध किया। उन्होंने पश्चिमी की पद्धति जारी करने में कितनी जोखिम भरी हुई है, इस बारे में उनकी दी हुई चेतावनी आज भी विचारणीय है–''कुछ लोग पाश्चात्य सुधारों के पूजारी हैं। उन्हें चरखे में देश को डेढ़ सौ वर्ष पीछे ले जाने का डर दिखाई दे रहा है। वह यह नहीं देख सकते है कि पश्चिमी सुधार जगत की अशान्ति की जड़ है। राजा–प्रजा के बीच कलह कराने वाला, बड़ी–बड़ी सल्तनतों का नाश कराने वाला और मालिको तथा मजदूरों के बीच गृह–युद्ध मचाने वाला पश्चिमी सुधार शैतानी वस्त्रों और सामग्री पर निर्मित है। इस सुधार का फँदा सारी दुनिया पर जोर के साथ फैलता जा रहा है। ऐसे समय

हिन्दुस्तान उसके विरूद्ध अकेला रहकर अपना और संभव हो तो जगत का बचाव करना चहता है। पाश्चात्य सुधार हिन्दुस्तान में जारी करने की इच्छा रखने वालों के पास उस सुधार को पचाने की क्या सामग्री है? हिन्दुस्तान इस सुधार के पीछे दौड़ने में सदा पीछे ही रहेगा। वह इस भूमि के अनुकूल ही नहीं है। आत्मबल को पूजने वाला हिन्दुस्तान इस शैतान के क्षेत्र में कभी बहने वाला नहीं है।''[9]

सरदार वल्लभ भाई पटेल को भारत का लौह पुरूष कहा जाता है। एक अर्थ में यह कथन यथार्थ है, क्योंकि उनमें दष्ढ़ मनोबल के साथ अद्भुत संकल्प–शक्ति कूट–कूट कर भरी थी। इस कारण कठिन परिस्थितियों में भी देश को बचा लेने की कला में वे सिद्ध बन चुके थे।

सन् 1928ई0 में बारटोली में किसानों के सफल सत्याग्रह का उन्होंने नेतृत्व किया था। उनकी वेशभूषा सामान्य किसान की थी लेकिन उनकी आँखों में राष्ट्र के गौरवमय, तेजस्वी भविष्य का चित्र स्थापित किया था।[10]

किसानों की समस्या उनके दुख–दर्द उनकी चिन्ता का विषय था। किसानों की भलाई सुनिश्चित करना और उनके हितों के लिए लड़ने को उन्होंने अपना कर्तव्य माना।

वास्तव में वह किसानों के सच्चे हितैषी थे। 1917 में गोधरा राजनीतिक सम्मेलन के दौरान वह गाँधी जी के करीब आए। तब कार्य समिति के अध्यक्ष गाँधी जी बने ओर वल्लभभाई उसके सचिव। खेड़ा में किसान प्रतिनिधिमंडल उनसे मिला। इसी बीच चंपारण सत्यागह की सफलता के किस्से यहाँ भी सुनाई पड़ने लगे। इसी प्रकार बारडौली का किसान आंदोलन भी ब्रिटिश अफसरों द्वारा उत्पीड़न एवं पुलिस ज्यादती का शिकार हो चला। 1924 और 1927 में दो बार बड़े हुए लगान की वसूली का विरोध तीव्र हुआ। किसानों ने मद्यपान छोड़ दिया। औरतों ने पीतल के भारी गहने छोड़कर खादी और चरखे को अपना लिया। गाँव–गाँव में सत्यागृह के गीत गुँजने लगे और बड़ी–बड़ी जनसभाएँ हुई। आंदोलन ने व्यापक रूप लेना शुरू कर दिया, लिहाजा भयभीत होकर सरकार ने एक स्वतंत्र खुली जांच का फैसला किया और पुरानी दरों पर लगान लेना स्वीकार कर लिया। सभी बंदियों को रिहा किया गया। इस आंदोलन ने न केवल वल्लभभाई को 'सरदार' बनाया, बल्कि उन्हें राष्ट्रीय ख्याति का नेता भी बना दिया। समूचे स्वतंत्रता आन्दोलन में इस घटना के बाद ग्रामीण सत्याग्रहियों की संख्या में ऐतिहासिक वृद्धि होने लगी। उन्होंने अपनी ओजस्वी वाणी से एवं दक्षता से किसानों को निर्भीक बनाया।[11]

उनकी राष्ट्रप्रेम के प्रति असीम आस्था एवं एकत्व की भावना को सम्मान देते हुए गुजरात की पावन धरा पर 'स्टेच्यू ऑफ यूनिटी' का निर्माण किया। जिसके विशाल स्वरूप से हमें हमारे देश के एकल रूप से सुशोभित अखण्ड भारत के दर्शन होते है।[12]

सरदार जी ने देश के लोगों को देश के प्रति अपने–अपने कर्तव्य निर्वाह की बात कही। 14 नवम्बर 1949 को ऑल इण्डिया रेडियों, दिल्ली पर दिये गये प्रेरक भाषण में कहा कि ''हम सबको मौजूदा राष्ट्रीय संकटों को पूरी तरह समझना चाहिए। किसी समान खतरे के सामने जैसा करते है, वैसे ही आज भी हमें आपसी मतभेद भूल जाने चाहिए। हमें राष्ट्र के प्रति अपना ऋण चुकाने के लिए मितव्ययी बनना चाहिए। अगर देश आर्थिक गुलामी में डूब गया, तो कौन फलेगा–फूलेगा? अगर देश तरक्की करेगा तो कौन डूबेगा। यही हमारी एकमात्र भावना होनी चाहिए। यही हमारा एकमात्र विचार होना चाहिए।

उद्योगपतियों को अपने कारखानों और मशीनों से ज्यादा से ज्यादा पैदा करने की कोशिश करनी चाहिए, मजदूरों को चाहिए कि वे देशहित के लिए अपने साधनों से ज्यादा से ज्यादा फायदा उठाने में राष्ट्र की मदद करें। अगर किसी देश के भले के लिए अपने हक की चीज का त्याग भी करना पड़े तो उसे खुशी से करना चाहिए।[13]

गाँधी जी की तरह सरदार जी भी हमेशा नैतिकता और ईमानदारी की राजनीति की बात करते। चीन की साम्राज्यवादी नीतियों के प्रति जून 1949 ई0 में नेहरू जी को स्पष्ट लिखा कि तिब्बत में अपनी स्थिति मजबूत करनी होगी, साम्यवादी शक्तियों से दूर रहना होगा। चीन तिब्बत की स्वायत्ता को अवश्य भंग करेगा। उन्होंने राजनीतिक तौर पर आधारभूत सुविधाओं यथा–सड़क, रेल, वायु सेना, संचार, यातायात द्वारा तिब्बत, भूटान, सिक्किम, दार्जिलिंग व असम से सम्बन्धों को और निकट लाने की सलाह दी थी। उनका विचार आज भी प्रासंगिक है क्योंकि एक तरफ तो चीन भरत की फरफ दोस्ती का हाथ बढ़ाता है और दूसरी तरफ भारत की सीमा पर सैनिक जमावड़ा कर देता है। आज चीन का सीमा–विवाद अगर पटेल की नीति का पालन करते तो नहीं होता।[14]

अन्ततः लौह पुरूष सरदार वल्लभभाई पटेल ने राष्ट्रवाद को व्यवहारिकता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वास्तव में वे आधुनिक भारत के शिल्पकार के नज़रियें से राष्ट्र को एक करना चाहते थे। उनके व्यक्तित्व में हमें विस्मार्क जैसी संगठन कुशलता, चाणक्य जैसी राजनीति सत्ता तथा राष्ट्रीय एकता के प्रति अब्राहम लिंकन जैसी अटूट निष्ठा दिखाई देती है। वे राष्ट्रवादी थे और उन्होंने राष्ट्र का एकीकरण भी सफलतापूर्ण करवाया।

उनका महान चरित्र, उच्च सैद्धान्तिक भूमिका, अपार सेवा भावना और नितान्त वास्तविकतावादी दृष्टि के आधार पर अपने जीवनकाल में देश के लिए जो अद्भुत सिद्धियाँ प्राप्त की, वे आज की पीढ़ी के लिए भी एक आदर्श है। सरदार जी का जीवन, कार्य एवं उनका महान व्यक्तित्व युवाओं को मार्गदर्शन प्रदान करता है।[15]

संदर्भ

1. सुधार, डॉ0 गोविन्द. राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी और राष्ट्र निर्माता सरदार पटेल–राष्ट्रवाद एवं राष्ट्रीय एकीकरण. पृष्ठ **11–53.**
2. वही. पृष्ठ **14.**
3. राव, भी भाई. (2014). पटेल प्रस्तावना : हिन्द के सरदार में लिखित. नवजीवन प्रकाशन मन्दिरः अहमदाबाद. पृष्ठ **6–7.**
4. वर्मा, डॉ0 वी0पी0. (1998). आधुनिक राजनीतिक चिन्तन. लक्ष्मी नारायण अग्रवालः आगरा. पृष्ठ **742.**
5. नादुरकर, गणेश. (1981). सरदार श्री के विशिष्ट और अनोखे पत्र. प्रकाशन सरदार वल्लभभाई पटेल स्मारक भवनः अमदाबाद. पृष्ठ **3.**
6. वही. पृष्ठ **19.**
7. चाँद, प्रो0 एस0एम0., फातिमा, प्रो0 इकबाल. (2016). सरदार वल्लभभाई पटेल जीवन एवं विचार. पंचशील प्रकाशन. पृष्ठ **51.**

8. वही. पृष्ठ **50.**
9. पारीख, नरहरि. सरदार वल्लभभाई पटेल. प्रथम खण्ड. नवजीवनः अहमदाबाद. पृष्ठ **165.**
10. वर्मा, डॉ0 वी0पी0. (1998). आधुनिक भरतीय राजनीतिक चिन्तन. लक्ष्मी नारायण अग्रवालः आगरा. पृष्ठ **742.**
11. त्यागी, के0सी0. (2022). आज भी असरदार है 'सरदार पटेल'. संपादकीय दैनिक जागराः दिनांक 31 अक्टूबर. पृष्ठ **8.**
12. उपाध्याय, पं0 दीनदयाल. (2022). राष्ट्रधर्म. मासिक पत्रिका. अंक अक्टूबर. पृष्ठ **37.**
13. नाटफरकर, गणेश. (1981). सरदार श्री के विशिष्ट और अनोखे पत्र. प्रकाशन सरदार वल्लभभाई पटेल स्मारक भवनः अमदाबाद. पृष्ठ **3.**
14. वही. कवर पेज से.
15. सुधार, डॉ0 गोविन्द. राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी और राष्ट्र निर्माता सरदार पटेल, राष्ट्रवाद एवं राष्ट्रीय एकीकरण. पृष्ठ **197.**